JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोविड 19 से वर्तमान समय तक भारतीय विदेश नीति

डॉ. प्रेरणा दाधीच
प्राचार्य मयूर जमना देवी कॉलेज नासिरदा, देवली

कोरोना वायरस महामारी ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में आमूलचूल परिवर्तन किया है। चीन में दिसम्बर 2019 में प्रकाश में आई यह महामारी विश्व के 200 से अधिक देशों में फैल चुकी हं। इससे निपटने के लिए प्रभावी रणनीति बनाने में विश्व के सभी राष्ट्रों द्वारा राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किए जा रहे है। भारत भी इन प्रयासों से अछूता नहीं है। भारत में इस वैश्विक महामारी से निपटने के लिए विभिन्न राष्ट्रों को सहयोग दिया है तथा उनसे सहयोग भी प्राप्त किया है। इस परस्पर सहयोग से भारत के शेष विश्व के साथ राजनीतिक सम्बन्धों की पुनर्रचना हुई है। कोरोना महामारी के दौर में हम भारत के साथ शेष विश्व के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सम्बन्धों की समीक्षा करेंगे।

भारत व अमेरिका –

भारत व अमेरिका विश्व के सबसे बड़े तथा विश्व के सबसे पुराने लोकतांत्रिक देश है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से ही भारत व अमेरिका के सम्बन्ध उतार चढ़ाव भरे रहे है। 21वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही भारत व अमेरिका से सम्बन्ध कुछ अपवादों को छोड़कर अनुकूल ही रहे हैं। 24 व 25 फरवरी 2020 की अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की भारत यात्रा में उनके स्वागत के लिए अहमदाबाद में ''नमस्ते ट्रंप'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भारत व अमेरिका में कोविड का प्रसार का पहला मामला लगभग एक ही समय पर आया। अमेरिका में मार्च तथा भारत में अप्रैल से कोरोना संक्रमण की दर गति पकड़ने लगी। देखते ही देखते अमेरिका संक्रमितों की संख्या तथा कुल मृत्यु के मामले में विश्व में पहले स्थान पर पहुँच गया। जब विश्व के विभिन्न देशों के चिकित्सक इसे गंभीर मानकर इसका इलाज करने का प्रयास कर रहे थे, लगभग उसी समय भारत मलेरिया के लिए प्रयोग की जाने वाली दवा ''हाइड्रोक्सीक्लोराक्वीन'' से इसका इलाज करने में कुछ हद तक सफल हो पा रहे थे। हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन द्वारा इलाज की सफलता से प्रेरित होकर अमेरिका ने भारत से एक करोड़ हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन का ऑर्डर किया, जिसे भारत ने समयबद्ध रूप से पूरा कर दिया। भारत ने अमेरिका को इन उपायों की आपूर्ति तब की जब

भारत ने अपनी संभावित घरेलू आवश्यकताओं को देखते हुए आवश्यक दवाओं के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसके लिए पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत का आभार भी व्यक्त किया।1

भारत द्वारा अमेरिका की इस बिना शर्त सहायता से प्रभावित होकर अमेरिका ने भारत को 200 वेंटीलेटर दान में देने की घोषणा की, जिसमें से 100 वेंटीलेटर तथा आवश्यक मेडिकल उपकरणों की पहली खेम 15 जून 2020 को भारत को प्राप्त हो चुकी है। ''अदृश्य शत्रु'' से मुकाबला करने के लिए वैक्सीन बनाने के लिए पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत से सहयोग की बात को स्वीकार किया।2

वही जी20 शिखर सम्मेलन, नई दिल्ली 9 सितम्बर 2023 व 10 सितम्बर 2023 जो बाइडन ने सम्मेलन में भाग लिया। अमेरिका राष्ट्रपति जो बाइडेन ने ट्वीट कर लिखा ''ऐसे समय में जब वैश्विक अर्थव्यवस्था जलवायु संकट, कमजोरी और संघर्षों के थपेड़े झेल रही है, इस साल के शिखर सममेलन ने साबित कर दिया कि जी20 अब भी हमारी सबसे गंभीर समस्याओं का हल निकाल सकता है।'' उससे जी20 सम्मेलन की सफलता प्रदर्शित होती है।3

भारत व चीन –

चीन के साथ भारत के रिश्ते ऐतिहासिक रूप से उतार–चढ़ाव भर रहे है। 1948 में चीन में साम्यवादी क्रांति के पश्चात उसे मान्यता देने वाला पहला गैर साम्यवादी देश भारत ही था। 1955 में दोनों देशों के मध्य पंचशील समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इसके अन्तर्गत दोनों देश अहस्तक्षेप व अनाक्रमण के सिद्धान्त का पालन करते हुए परस्पर शाति व सद्भाव के साथ एक दूसरे की क्षेत्रीय संप्रभुता तथा अखंडता की रक्षा करने पर सहमत हुए। पंचशील समझौते का उल्लंघन चीन द्वारा किया गया जब उसने तिब्बत पर कब्जा कर लिया तथा वहाँ के सर्वोच्च नेता को भारत में आत्म–निर्वासन पर मजबूर कर दिया। 1962 में भारत पर आक्रमण के साथ ही चीन के साथ समस्त राजनायिक सम्बन्धों का अंत हो गया। दोनों देशों के मध्य 1988 में राजीव गाँधी की चीन यात्रा के साथ ही राजनायिक सम्बन्धों की पुनर्स्थापना हो पाई। तब से 2019 तक दोनों देशों के राजनायिक सम्बन्धों में लगातार सुधार होता रहा है। यद्यपि सुरक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोणों पर दोनों देशों में गंभीर मतभेद रहे है। वैश्विक महामारी कोविड–19 का पहला मामला चीन के बुहान शहर में प्रकाश में आया। दिसम्बर 2019 में इस महामारी की पुष्टि होने के बाद से यह बुहान से होते हुए विश्व के लगभग सभो देशों में फैल गई। महामारी आरंभ होने के कुछ दिनों तक चीन के प्रति शेष विश्व का सहानुभूतिपूर्वक रवैया धीरे–धीरे आलोचनात्मक होता गया। महामारी फैलने से रोकने के लिए किये गए प्रयासों के प्रति जानबूझ कर लापरवाही बरतने के लिए चीन की आलोचना की जाने लगी। समय पर जानकारी न देने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन की भी आलोचना की गई। विश्व के अनेक देशों ने चीन पर कोरोना वायरस को लैब में बनाने

का आरोप लगाया तथा चीन के साथ ही विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका की जांच की भी मांग की गयी। इस महामारी के सम्बन्ध में भारत की प्रारंभिक प्रतिक्रिया चीन को लेकर सहानुभूतिपूर्ण थी। आधिकारिक रूप से किसी भी षड़यन्त्र सिद्धान्त से दूरी बनाते हुए भारत ने महामारी के संदर्भ में चीन को हरसंभव सहयोग देने का वादा किया। परन्तु भारतीय जनमानस में चीन के प्रति आक्रोश बढ़ता जा रहा था। महामारी के प्रकोप के समय में भारत ने अपने पड़ोसियों को मानवीय आधार पर सहायता की तथा नेपाल, बांग्लादेश, मालदीव तथा श्रीलंका के नागरिकों को भारतीय वायुसेना के विमानों द्वारा उनके अपने देश पहुँचाया। इसके साथ ही इन देशों में जीवनरक्षक दवाईयां भजकर भी इनकी सहायता की गयी।4

इस महामारी के आरंभ होने के साथ ही इससे निबटने के लिए भारत के पास पर्याप्त संसाधनों की कमी थी। भारत में पीपीई किट, टेस्टिंग किट तथा वेंटीलेटर जैसी सुविधाआं का लगभग अभाव था। भारत में इसके लिए चीन से इस सामग्री की आयात की घोषणा की, परन्तु बाद में भारतीय मानकों के अनुसार गुणवत्तापूर्ण न पाए जाने पर पचास लाख टेस्टिंग किट तथा समय पर न प्रदान करने पर पीपीई किट का ऑर्डर रद्द कर दिया।5

अप्रैल तक आते–आते इटली, फ्रांस, ब्रिटेन, अमेरिका तथा ईरान में महामारी का प्रभाव तेजी से बढ़ने लगा। ज्यादातर देशों में इसके प्रभावों को कम करने के निरोध उपायों क लिए लॉकडाउन लगा दिया गया। भारत में कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए 25 मार्च, 2020 से लॉकडाउन लागू कर दिया गया। चीन में अप्रैल तक कोरोना के मामलों पर काफो हद तक काबू पा लिया गया था। चीन ने इन यूरोपीय देशों में भी मास्क, पीपीई किट तथा वेंटीलेटर की सप्लाई की परन्तु अधिकतर देशों ने खराब गुणवत्ता के कारण अपना ऑर्डर रद्द कर दिया। इसी बीच भारत तथा चीन की सीमा के मध्य तनाव बढ़ने लगा। पाँच मई को भारत व चीन के मध्य पूर्वी लद्दाख की सीमा पर दोनों देशों के सैनिकों के बीच हाथापाई हुई। 12 मई को राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ''आत्मनिर्भर भारत'' का नारा दिया। 20 लाख करोड़ के पैकेज की घोषणा के साथ ही उन्होंने भारत से दूसरे देशों पर अपनी निर्भरता घटाने तथा सभी क्षेत्रों में नवप्रवर्तन करने का आह्वान किया। भारत में इसका अर्थ चीनी वस्तुओं पर भारतीयों की निर्भरता घटाने के रूप में समझा गया।6

आत्मनिर्भरता बनने की इस मुहिम ने चीन को असहज बना दिया। 17 जून को भारत की पूर्वी सीमा में स्थित गलवान घाटी में दोनों देशों के मध्य हुए खूनी संघर्ष में 20 भारतीय सैनिक शहीद हो गए। इससे भारतीय जनमानस तथा प्रबुद्ध वर्ग में चीन के प्रतिरोष फैला तथा चीन के बहिष्कार की मांग उठने लगी। इसकी प्रतिक्रिया में भारत ने 59 चीनी एप पर राष्ट्रीय सुरक्षा को देखते हुए प्रतिबंध लगा दिया तथा चीन की कई कंपनियों के ठेके रद्द कर दिए। अमेरिका ने

भी इस मामले पर भारत के पक्ष का समर्थन किया। वर्तमान में भी चीन व भारत के सम्बन्ध तनावपूर्ण बने हुए हैं।

भारत व दक्षेस –

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस) के देशों में इस महामारी में इस महामारी के संभावित प्रसार को ध्यान में रखते हुए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता मं 15 मार्च को ही एक वर्चुअल कांफ्रेस की तथा इस महामारी को रोकने के लिए एक करोड़ अमरीकी डॉलर का आरंभिक फंड बनाने की घोषणा की, जो इस क्षेत्र में कोविड के प्रभावों को राकने में मदद करेगा, इसके साथ ही प्रधानमंत्री मोदी ने इस क्षेत्र में काम कर रहे डॉक्टरों तथा नसों के प्रशिक्षण के लिए भारत के सहयोग का वादा भी किया। इस बैठक की महत्वपूर्ण बात यह रही कि 2015 में नेपाल की अध्यक्षता में आयोजित बैठक के बाद यह पहली वर्चुअल बैठक थीं इस बैठक में पाकिस्तान के अलावा अन्य सभी देशों नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव तथा अफगानिस्तान के शीर्ष नेताओं ने भाग लिया।7

भारत और जी–20 –

27 मार्च 2020 को विश्व के प्रमुख देशों के संगठन जी–20 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कोविड समस्या से लड़ने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन को मजबूत करने पर जोर दिया। मोदी ने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ सभी देशों को पूर्व चेतावनी प्रणाली, वैक्सीन निर्माण तथा क्षमता निर्माण के लिए बिना आरोप–प्रत्यारोपों पर ध्यान दिए मिलकर काम करना चाहिए। ध्यातव्य है कि महामारी के उद्गम, सूचनाएं छुपाने व इसका जानबूझकर प्रसार करने के लिए चीन व अमेरिका ने परस्पर आरोप लगाए थे। जी–20 देशों द्वारा कोविड महामारी के कारण उत्पन्न सामाजिक व आर्थिक प्रभावों ने निबटने के लिए पाँच ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का फंड बनाने का निर्णय लिया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हमें कोविड समस्या को आर्थिक समस्या के स्थान पर मानवीय त्रासदी के रूप में लेना चाहिए और मिलजुलकर इसका समाधान करना चाहिए।8

नई दिल्ली, भारत में 9 और 10 सितम्बर 2023 को 18वें जी–20 शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह पहला शिखर सम्मेलन था जब भारत ने जी–20 देशों के शिखर सम्मेलन की मेजबानी की। इस शिखर सम्मेलन का विषय ‘‘वसुधैव कुटुंबकम’’ था, जिसका अर्थ है, ‘‘विश्व एक परिवार है’’। अफ्रीकन यूनियन को जी–20 में शामिल किया गया है।[९]

अफ्रीकन यूनियन ने अफ्रीकी महाद्वीप के 55 देश शामिल है। ऐसे में जी 20 जैसे अहम समूह में अफ्रीकन यूनियन के शामिल होने से दुनिया में नई विश्व व्यवस्था का निर्माण होगा, जिसमें विकासशील और गरीब देशा को भी वैश्विक फैसले करने की व्यवस्था में प्रतिनिधित्व मिलेगा।प

जी–20 की बैठक में दिल्ली घोषणा पत्र को सर्वसम्मति से मंजूर किया गया, जो कि भारत की कूटनीतिक ताकत का उदाहरण है। इस घोषणा पत्र में अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों को बनाए रखन, क्षेत्रीय अखंडता आर संप्रभुता, अन्तर्राष्ट्रीय मानवीय कानून, शांति और स्थिरता की रक्षा करने वाली बहुपक्षीय प्रणाली को बनाए रखने का आह्वान किया गया है।पप

भारत, सउदी अरब, अमेरिका और यूरोप को जोड़ने वाली लिंक प्रोजेक्ट पर सहमति बनी है। इस प्रोजेक्ट को चीन के वेल्ड एण्ड रोड एनीशिएटिव का जवाब माना जा रहा है, जो दुनिया के विकासशील देशों को आधारभूत ढ़ांचे के विकास के नाम पर चीन के कर्ज के जाल से बचाएगा।पट

प्रधानमंत्री मोदी ने ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस बनाने का एलान किया है। इस गठबंधन में भारत, ब्राजील, अमेरिका जैसे देश शामिल है। इस गठबंधन के जरिए अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा दिया जाएगा और कार्बन उत्सर्जन को नेट जीरो करने में काफी मदद मिलेगी।ट

हाल के सालों में दुनिया के देशों में एक दूसरे के प्रति विश्वास की कमी आई है। दिल्ली में हुए जी–20 सम्मेलन में इस विश्वास को फिर से मजबूत करने की कोशिश की गई। खासकर यूक्रेन युद्ध के बाद जो तनाव है, उसे कम करने की कोशिश की गई।9

भारत व संयुक्त राष्ट्र –

भारत को वर्ष 2021 तथा 2022 के लिए संयुक्त राष्ट्र परिषद का अस्थाई सदस्य चुना गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 17 जून 2020 को संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् की एक उच्च स्तरीय कांफ्रेस को वीडियो कांफ्रेस से संबोधित करते हुए कहा कि कोविड संकट के समय संयुक्त राष्ट्र की 75वीं वर्षगांठ पर इसके पुनगर्ठन के बारे में बहुपक्षीय रूप से विचार करने की आवश्यकता है। उन्होनें कहा कि कोविड संकट का बेहतर समाधान बहुपक्षीयता तथा वैश्विक संस्थाओं की मजबूत साझेदारी से ही प्राप्त किया जा सकता है।10

जी–20 के 9–10 सितम्बर 2023 के तीसरे सत्र में पीएम मोदी ने एक बार फिर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता पर जोर दिया। पीएम मोदी ने कहा कि वक्त के साथ

बदलाव भी जरुरी है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने भी द्विपक्षीय वार्ता के दौरान यूएन की सदस्यता का मुद्दा उठाया था। उन्होंने भारत को यूएन की स्थाई सदस्यता के लिए अपना समर्थन भी दिया था। यूएन की सदस्यता को लेकर महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने 8 सितम्बर 2023 को कहा था कि वह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने की भारत की आकांक्षाओं को पूरी तरह से समझते है, लेकिन शीर्ष वैश्विक निकाय में सुधार के बारे में फैसला करना सदस्य देशों का काम है। उन्होंने कहा ''इसका फैसला में नहीं कर सकता कि सुरक्षा परिषद् में कौन होगा या किसे होना चाहिए, यह फैसला सदस्य देशों को करना है। हालांकि मेरा मानना है कि हमें एक ऐसे सुरक्षा परिषद की आवश्यकता है, जो आज की दुनिया का प्रतिनिधित्व करे।''11

इस प्रकार हम देखते है कि भारत ने कोविड संकट के आरम्भ स ही प्रो–एक्टिव राजनीति अपनायी है। भारत ने अपनी क्षमता से आगे जाकर विश्व के ज्यादातर देशों की सहायता की है। भारत ने इसे आर्थिक समस्या न मानकर, मानवीय समस्या माना है। तथा मानवीय समस्या के लिए इसके मानवीय समाधान पर जोर दिया है। भारत ने आत्मनिर्भरता पर जार दिया है, परन्तु इस आत्मनिर्भरता का अर्थ एकाकीपन या विश्व की समस्याओं के प्रति उपेक्षा का भाव रखना नहीं है। आत्मनिर्भरता के मंत्र के साथ भारत ने अपनी सुरक्षा तथा राष्ट्रीय संप्रभुता को प्राथमिकता पर रखा है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 51 के सिद्धान्तों के अनुसार उसने द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय तथा वैश्विक संगठनों के माध्यम से इस मानवीय त्रासदी के समाधान पर जोर दिया और विश्व कल्याण की बात कही।

संदर्भ

1. https://thekootneeti.in/2020/04/15india-us-relation-in-times-of-covid-19/

2. https://www.dristatiias-G20.com

3. https:www.hindustantimes.com/india-news/first-tranche-of-100-ventilators-shipped-by-united-states-to-arrive-on-Monday/story-wtyjesy46dnLusxCGUFfsk.html

4. https://www.bbc.com/news/world-asia-india-52451455

5. https://www.indiatoday.in/india/story/Pm-modi-lockdown-speech-self-dependency-economic-measures-1677266-2020-05-12

6. https://www.livemint.com/news/india/at-saqrc-video-conference-pm-proposes-fund-tofight-covid-19-11584294024354.html

7. https:timesofindia.indiatimes.com/india/pm-modi-pitches-for-new-crisis-management-protocol-at-g-20-video-conference-on-coronvious/articleshow/748350/.cms

8. https://www.ndtv.com/india-news/coronovirus-india-at-united-nations-says-covid-19-challaenges-can-be-addressed-only-through-multilateralism-global-solidarity-2262212

9. www.amarujala.com/india-news/g20-meeting-five-big-takeaway-decisions

10. www.prbhatkhabar.com